International Journal of Advanced Education and Research
www.multidisciplinaryjournals.net
ISSN: 2455-5746
Received: 25-03-2023, Accepted: 09-04-2023, Published: 24-04-2023
Volume 8, Issue 1, 2023, Page No. 89-91

बांस एवं रिंगाल हस्तशिल्प ग्रामीण आजीविका में सुधार का महत्वपूर्ण संसाधन

डॉ. विपिन कुमार सती[1], डॉ. दुर्गेश पन्त[2]
[1] विभाग सुराज एवं विज्ञान प्रौद्योगिकी, उत्तराखंड राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद (यूकॉस्ट), देहरादून सूचना प्रौद्योगिकी, विज्ञान धाम झाजरा देहरादून, उत्तराखंड, भारत
[2] प्रोफेसर, विभाग सुराज एवं विज्ञान प्रौद्योगिकी, उत्तराखंड राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद (यूकॉस्ट), देहरादून सूचना प्रौद्योगिकी, विज्ञान धाम झाजरा देहरादून, उत्तराखंड, भारत

सारांश
उत्तराखण्ड राज्य जैवविविधता की दृष्टि से हॉट–स्पॉट होने के कारण यहां पर पाये जाने वाले प्राकृतिक संसाधन अल्प आय वर्ग एवं ग्रामीणों की आजीविका के महत्वपूर्ण संसाधन हैं, इन्ही संसाधनों में से बांस एवं रिंगाल के संसाधन ग्रामीण काश्तकारों के आजीविका के प्रमुख स्रोत है। बांस घास की प्रजाती का एक ऐसा पौधा है जिसे इसके बहुउपयोगी गुणों के कारण इसे हरा सोना एवं च्ववत उंदे जपउइमत के नामों से जाना जाता है। उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक स्थिति अत्यन्त विषम एवं संवेदनशील होने के कारण रोजगार के अल्प संसाधन है। बांस के संसाधनों को संरक्षण एवं काश्तकारों की क्षमता विकास के द्वारा रोजगार के अवसर प्राप्त किये जा सकते है। बांस पर्यावरण की दृष्टि से प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने, सामुदायिक विकास एवं मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ आयवर्धन व रोजगार का अतिउत्तम संसाधन हो सकता है। वर्तमान समय में कोविड–19 महामारी के प्रभाव से रोजगार के अवसरों में भारी कमी आयी है इसके साथ ही पिछड़े समुदाय के काश्तकार जो इस उद्यम से जुड़े हैं उनके लिए बांस एवं रिंगाल के संसाधन रोजगार एवं आयवर्धक हेतु सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अतः इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये उत्तराखंड राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद (यूकॉस्ट), द्वारा राज्य में जीवोकोपार्जन हेतु बांस एवं रिंगाल पर आधारित पारम्परिक उत्पादों के मूल्यवर्धन हेतु व काश्तकारों के सामाजिक आर्थिक उन्नयन हेतु उनकी कार्यक्षमता में विकास एवं समस्त काश्तकारों को उत्पादों की बिक्रि हेतु विभिन्न संस्थाओं के साथ जोड़ कर श्रृंखला विकास की प्रकिया का अध्ययन किया जा रहा हैं।

मूल शब्द: काश्तकार, आजीविका, बांस/रिंगाल, संसाधन, मूल्यवर्धन

पिछले कुछ दशकों से बढ़ती मानवीय आवश्यकताओं की आपूर्ति हेतु संसाधनों के अत्यधिक दोहन एवं जलवायु परिवर्तन की घटनाओं से प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास हुआ है जो कि एक गम्भीर समस्या है। अतः एक उचित विकल्प की अत्यन्त आवश्यकता है। बांस घास की प्रजाति का एक ऐसा पौधा है जिनकी लम्बाई अत्यधिक तीव्र गति से एक दिन में एक मीटर तक भी वृद्धि होती है। बांस प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने, सामुदायिक विकास एवं मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ आयवर्धन व रोजगार का अति उत्तम संसाधन हो सकता है। उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक स्थिति अत्यन्त विषम एवं संवेदनशील होने के कारण रोजगार के अल्प संसाधन है। बांस एवं रिंगाल उद्यम उत्तराखण्ड काश्तकारों का एक पुराना पारम्परिक उद्यम है किन्तु इस उद्यम को महत्व न देने के कारण विलुप्ति के कगार पर है। बांस के बहुउपयोगी गुणों के कारण इसे हरा सोना एवं च्ववत उंदे जपउइमत के नामों से जाना जाता है। पूरे विश्व में बांस के 75 (जेनेरा वंश) के अन्तर्गत लगभग 1250 प्रजातियां पायी जाती है, जिनमें चीन सर्वाधिक 26 जेनरा के अन्तर्गत 500 प्रजातियों के साथ विश्व में पहला स्थान है तथा भारत में 22

चित्र 1: बांस की झाडिया

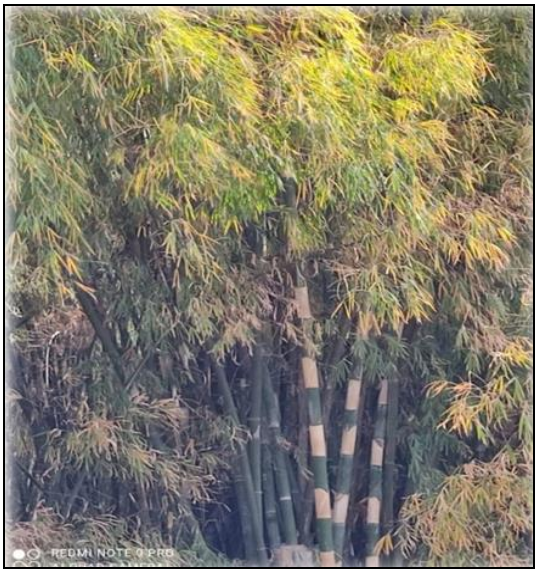

जेनरा के अर्न्तगत 136 प्रजातियां के साथ दूसरे स्थान पर है। पर्वतीय क्षेत्रो के ग्रामीणो की आजीविका में रिंगाल और बांस एक महत्वपूर्ण संसाधन हैं। उत्तराखण्ड राज्य में बांस उद्यम से जुडे काश्तकारों को बारूड़ी व रिंगाल उद्यम से जुड़े काश्तकारों को रूड़िया के नाम से जाना जाता है। उत्तराखण्ड की जलवायु भी बांस के लिये अत्यधिक अनुकूल होने के कारण बांस के काश्तकारों की आजीविका के प्रमुख संसाधन है। उत्तराखण्ड राज्य में बांस की कुल 8 प्रजातियां पाई जाती है जिनमें से 4 बांस (मोटा बांस) की और 4 रिंगाल (पतला बांस) की है। विश्व स्तर पर बांस के लगभग 10,000 वस्तुओं से भी अधिक उपयोग में लाया जा रहा है जिनमें से 1500 वस्तुओं
की पूर्ण सूचना भी उपलब्ध है। रिंगाल एक प्रकार का पतला व छोटा बाँस है । रिंगाल सबसे उपयोगी होता है। जो उत्तराखंड की पहाड़ियों में 1800–2400 मीटर की ऊँचाई पर खड़ी पहाड़ी ढलानों पर उगता है। यह उत्तराखंड के जंगलो में पाए जाने वाली बांस की प्रजाति का पौधा होता है, इसलिए इसे बोना बांस (Dwarf Bamboo) भी कहा जाता है। रिंगाल बांस की तुलना में काफी छोटा होता है। मोटे बांस 25 से 30 मीटर तक लंबे होते हैं वहीं रिंगाल की लंबाई 5 से 8 मीटर तक होती है। बांस की तरह यह भी समूह में उगता है। यह पर्याप्त नमी वाले स्थानों पर उगता है। बांस प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने, सामुदायिक विकास एवं मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ आयवर्धक व रोजगार का अति उत्तम संसाधन हो सकता है। उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक स्थिति अत्यन्त विषम एवं संवेदनशील होने के कारण रोजगार के अल्प संसाधन है। बांस एवं रिंगाल उद्यम उत्तराखण्ड काश्तकारों का एक पुराना पारम्परिक उद्यम है किन्तु इस उद्यमों को महत्व न देने के कारण विलुप्ति के कगार पर है। बांस के बहुउपयोगी गुणों के कारण इसे हरा सोना एवं Poor man's timber के नामों से जाना जाता है। पूरे विश्व में बांस के 75 (जेनेरा वंश) के अन्तर्गत लगभग 1250 प्रजातियां पायी जाती है, जिनमें चीन सर्वाधिक 26 जेनरा के अन्तर्गत 500 प्रजातियों के साथ विश्व में पहला स्थान है तथा भारत में 22 जेनरा के अर्न्तगत 136 प्रजातियां के साथ दूसरे स्थान पर है। पर्वतीय क्षेत्रो के ग्रामीणो की आजीविका में रिंगाल और बांस एक महत्वपूर्ण संसाधन हैं। उत्तराखण्ड राज्य में बांस उद्यम से जुडे काश्तकारों को बारूड़ी व रिंगाल उद्यम से जुड़े काश्तकारों को रूड़िया के नाम से जाना जाता है। उत्तराखण्ड की जलवायु भी बांस के लिये अत्यधिक अनुकूल होने के कारण बांस के काश्तकारों की आजीविका के प्रमुख संसाधन है। उत्तराखण्ड राज्य में बांस की कुल 8 प्रजातियां पाई जाती है जिनमें से 4 बांस (मोटा बांस) की और 4 रिंगाल (पतला बांस) की है। विश्व स्तर पर बांस के लगभग 10,000 वस्तुओं से भी अधिक उपयोग में लाया जा रहा है जिनमें से 1500 वस्तुओं की पूर्ण सूचना भी उपलब्ध है। रिंगाल बांस की तुलना में काफी छोटा होता है। मोटे बांस 25 से 30 मीटर तक लंबे होते हैं वहीं रिंगाल की लंबाई 5 से 8 मीटर तक होती है। बांस की तरह यह भी समूह में उगता है। यह पर्याप्त नमी वाले स्थानों पर उगता है। वन विभाग के अनुसार रिंगाल एक वृक्ष है, परन्तु वन विभाग की 1926–1928 से सन् 1936–37 की कार्य योजना में रिगाल की परिभाषा–"रिंगाल एक बहुवर्षीय पेड़ों के नीचे उगने वाली झाड़ी/ घास है जो नोड्स एवं इन्टर नोड्स में विभक्त है यह भूक्षरण को रोकने और सामाजिक –आर्थिक रूप से पिछड़े गरीब समुदाय की आजीविका का स्रोत है."सामान्यतः रिंगाल
हस्तशिल्पियों या रूडिया समुदायों से मिली जानकारी के अनुसार रिंगाल के क्राफ्ट बनाने में सर्वाधिक उपयोग देव रिंगाल *A. falconerii* का किया जाता है लेकिन देव रिंगाल के साथ–साथ रिंगाल की अन्य प्रजातियों थाम रिंगाल ;*Thamnocalamus spathiflorus*) xksy fjaxky (*Arundinaria falcata*) और जुमरा रिगाल (*Arundinaria jaunsarensis*) का उपयोग उत्पाद बनाने में किया जा रहा है। राज्य में प्राचीन समय से ही स्कूल में रिंगाल की कलम का उपयोग लिखने के लिये किया जाता रहा है। इसके अतिरिक्त दैनिक जीवन में उपयोग किये जाने वाले कुछ उत्पाद जैसे कि सुपा (अनाज साफ करने के लिए), छोटी व बड़ी टोकरी, डलिया, झाड़ू, छज, चंगेरा इत्यिादि विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाये जाते हैं। उत्तराखंड राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों में उनकी विषम भौगोलिक स्थिति एवं दुर्गम क्षेत्र स्थान होने के कारण रोजगार के सीमित संसाधन होने के कारण स्थानीय निवासियों एवं काश्तकारों की निर्भरता प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है। वर्तमान में कोविड–19 महामारी के उपरांत युवा प्रवासियों के द्वारा राज्य में वापसी हो रही है। अतः इस स्थिति में उनके लिये आय के विकल्प विकसित करना अति आवश्यक है। चूंकि राज्य प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है। अतः उपलब्ध संसाधन आय व रोजगार के महत्वपूर्ण श्रोत हो सकते हैं। अतः विषय के महत्व को ध्यान में रखते हुए उत्तराखंड राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद (यूकॉस्ट), देहरादून, उत्तराखण्ड शासन द्वारा स्थानीय और प्रवासी वासियों हेतु आजीविका एवं आय सृजन प्रदान करने हेतु बांस/रिंगाल के संसाधनों से नये उत्पाद बनाने, उनका बाजारीकरण करने के प्रयास किये जा रहे हैं। बांस एवं रिंगाल हस्तशिल्प उत्तराखंड का एक पुराना पारंपरिक शिल्प है। इस उद्यम से जुड़े काश्तकारों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति अत्यन्त कमजोर हैं। क्योंकि इन्हें इनके बनाये गये परम्परागत उत्पादों द्वारा उचित मूल्य नहीं मिल पाता है जिस कारण युवा पीढ़ी इस उद्यम को नहीं अपना रही है जो कि एक गम्भीर विषय हैं।

उत्तराखण्ड राज्य में बांस की स्थिति–

उत्तराखण्ड राज्य में बांस के जंगलों का कुल क्षेत्रफल 1489¸ ाउ है। उत्तराखण्ड में बांस की आठ प्रजातियां पायी जाती है जिनमें से चार प्रजातियां रिंगाल की (पतला और बौना बांस) एवं चार प्रजातियां बांस (मोटा बांस) की पायी जाती है।

बांस/रिंगाल को आवश्यकता है हम सब के सहयोग की–

बांस/रिंगाल की इतनी उपयोगिता होने के बावजूद इसका भविष्य अंधकारमय होता जा रहा है। जहाँ आज की युवा पीढ़ी दूसरे रोजगार के अवसरों की तरफ दौड़ लगा रही है वहीं लोगों के आजकल प्लास्टिक से बनी वस्तुओं के अधिक उपयोग से इस कला को सँभालने वाले काश्तकारों की आय भी बहुत कम होता जा रहा है। सरकार को आवश्यकता है की इस प्रकार के काश्तकारों को निशुल्क प्रक्षिशण दिया जाए जिससे की वे FANCY Decorative आइटम्स भी तैयार कर सकें जैसे कि टेम्पल, झालर इत्यादि। सबसे अधिकसहयोग हम सब इस कला के काश्तकारों को दे सकते हैं इनकी बनायी हुई वस्तुओं का उपयोग करके। जो कि इनकी जीविका का साधन रहे हैं। यह Social Balance बनाने में भी बहुत मददगार होगा। अतः जब भी जाएं आप रिंगाल से बनी वस्तुओं का उपयोग करें एवं ss' कैंपेन में इस सुन्दर धरती को सरंक्षित करने में योगदान दिया जा सकता हैं।

चित्र 2: बांस के आधुनिकीकरण और बजारीकरण

बांस/रिंगाल एवं पहाड़ का अन्तर्सम्बन्ध

जल, जमीन और वनस्पति जीवन के पर्याय हैं। फिर इसके अस्तित्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। वनस्पति का पर्यावरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। मानव एवं जीवजन्तु जो पर्यावरण के मुख्य अंग है, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वनस्पति पर निर्भर रहते, हैं। हर वनस्पति किसी न किसी रूप में उपयोगी है। अतः वनों के बहुआयामी महत्व को देखते हुए इनकी सहायता से पनपने वाले स्थानीय कुटीर उद्योगों की ओर ध्यान केन्द्रित होना स्वाभाविक ही है। लेकिन आर्थिक प्रतिस्पर्धा की दौड़ में यह उद्यम लुप्त होते चले गये। यही नहीं ग्रामीण अस्मिता पर शहरी भाग दौड़ का असर पड़ने लगा और ग्रामीण अपनी मौलिकता को छोड़ कर दिखावे की तरफ दौड़ने लगे, ग्रामीण कारीगर अपने उद्योग के प्रति हतोत्साहित होने लगे। इन्हीं सब परिस्थितियों को देखते हुए सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों में पुराने समय से चला आ रहा रिंगाल उद्योग उपेक्षित होने लगा। अतः रिंगाल जो कि ऊँचे पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है वर्तमान में एक बहुमूल्य वनस्पति के रूप में ग्रामीण कारीगरों के द्वारा प्रयोग किया जाने लगा। रिंगाल आधारित उद्योग गढवाल एवं कुमाऊ क्षेत्रों के दूरस्थ गाँवों का परम्परागत उद्योग है। यह दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा एवं विकेन्द्रित उद्योग है जो कि स्थानीय कच्चे माल एवं स्थानीय बाजार पर आधारित है। रिंगाल उद्यमी ग्रामीण अर्थव्यवस्था और गाँव में रह रहे प्रत्येक प्रकार के उद्यमी परिवार के लिए आवश्यक है। रिंगाल दूरस्थ ग्रामीण पर्वतीय क्षेत्रों की दस्तकारी हस्तशिल्प का ना केवल सर्वोत्तम माध्यम है। वरन् यहाँ की सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक जन जीवन का महत्वपूर्ण अंग भी है।

बांस के उपयोग –

पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन में बांस की महत्वपूर्ण भूमिका है बांस के द्वारा प्राप्त आर्थिक लाभ निम्न प्रकार से हैं–

1. आय वर्धन
2. प्लास्टिक का विकल्प
3. बंजर भूमि को कृषि वानिकी के द्वारा उपजाऊ बनाकर
4. भोजन के रूप में
5. निर्माण कार्यों में
6. घरेलू लघु उद्योगों में
7. पल्प व कागज उद्योगों में
8. पर्यावरण संरक्षण में

बांस रिगाल व्यवसाय आज भी उत्तराखण्ड के काश्तकारों का स्वोजगार का प्रमुख स्रोत है लेकिन आज के भौतिकवादी युग में आधुनिकीकरण और बजारीकरण के कारण परम्परागत हस्तशिल्प से जुड़े व्यक्तियों का रोजगार पर प्रश्नचिन्ह लग गया है। वर्तमान में इस उद्यम के समक्ष मुख्य रूप से निम्न समस्यायें है–

1. तकनीकी ज्ञान का अभाव
2. गुणवत्ता की कमी
3. संसाधन का अनुचित प्रयोग
4. अनियमित विपणन व्यवस्था
5. नियोजन की कमी
6. प्रशिक्षण का अभाव
7. कौशल का अभाव
8. पर्यावरण संरक्षण की जानकारी में कमी

आभार

उत्तराखंड राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद (यूकॉस्ट), देहरादून सूचना प्रौद्योगिकी, सुराज एवं विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग उत्तराखंड शासन

संदर्भ

1. नेशनल मिशन ऑन बैम्बों एप्लीकेशन
2. बांस परिचायिका
3. वार्षिक प्रतिवेदन भारतीय वानिकी अनुसंधान केन्द्र 2019
4. वार्षिक प्रतिवेदन भारतीय वानिकी अनुसंधान केन्द्र 2017